गौ आधारित

कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर

दशपर्णी अर्क

दशपर्णी अर्क का प्रयोग रस चूसक कीट एवं इल्लियों के प्रबंधन के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

20 लीटर गोमूत्र
1 किलो गाय का गोबर
2 किलो करंज के पत्ते
2 किलो सीताफल के पत्ते
2 किलो बेसरम के पत्ते
2 किलो अरन्डी के पत्ते
2 किलो कनेर के पत्ते
500 ग्राम तंबाकू पीस के
500 ग्राम लहसुन
500 ग्राम पीसी हल्दी
500 ग्राम तीखी हरी मिर्च
100 लीटर पानी
200 ग्राम अदरह या सॉठ
2 किलो पपीता के पत्ते
2 किलो गेंदा के पत्ते
5 किलो नीम के पत्ते

बनाने की विधि

सर्वप्रथम एक प्लास्टिक के ड्रम में 100 ली. पानी डालें फिर इसमें 1 किलो गाय का गोबर और 20 ली. गोमूत्र मिला दें। अब इसमें नीम, करंज, सीताफल, धतूरा, बेल, बेसरम, पपीता, गेंदा की पत्ती की चटनी डालें और डंडे से चलाएं। फिर दूसरे दिन तंबाकू, मिर्च, लहसुन, सोंठ, हल्दी डालें फिर डंडे से चलाकर जालीदार कपड़े से बंद कर दें और 40 दिन तक छाया में रखें, प्रतिदिन सुबह शाम डंडे से हिलाते रहें ।

उपयोग

इस दशपर्णी अर्क का उपयोग चने की इल्ली, तम्बाकु इल्ली के प्रबंधन हेतु 20 लीटर मात्रा को 200 ली. पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 20 दिन के अंतराल से छिड़काव करें। इसको 6 माह तक प्रयोग कर सकते है।

सावधानियाँ

दशपर्णी अर्क को 6 माह तक भंडारित कर सकते है। उबालने के लिए मिट्टी के बर्तन का ही उपयोग करें। गौमूत्र धातु के बर्तन में न लें न ही भंडारित करें।

गौ आधारित

कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर

फास्फोरस बाहुल्य जैव खाद (प्रोम)

प्राकृतिक खेती के तहत पोषक तत्व प्रबंधन में प्रोम का विशेष महत्व है क्योंकि इसका निर्माण गोबर एवं प्राकृतिक तरीके से दौरान किए गए रॉक फास्फेट से किया जाता है गोबर की उपलब्धता के कारण पूर्व में सभी 17 आवश्यक पोषक तत्व का उपलब्धता होते हैं जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पौधों की बढ़वार के लिए आवश्यक होते हैं।

प्रोम
का दम
असरदार

निर्माण सामग्री

60 किलोग्राम बायोगैस स्लरी
40 किलोग्राम रॉक फास्फेट
100 ग्राम पी.एस.बी (फास्फोरस घोलिए जीवाणु)

आपकी मुस्कान

जय किसान

बनाने की विधि

इन सभी सामग्री को आपस में मिलाकर तैयार पदार्थों को 21 दिन तक मिलान करना है हर 5 दिन के बाद फावड़े की सहायता से मिलान करना है 21 वे दिन पाउडर प्रोमो प्रयोग के लिए तैयार हो जाता है यदि दानेदार प्रोम का निर्माण करना हो तो मशीन (ग्रेनुलेटर) की सहायता से कर सकते हैं।

उपयोग

प्रोम का उपयोग खेत तैयार करने के बाद तथा फसल की बुवाई के पूर्व या बुवाई के साथ करना चाहिए, मूंग गेहूं धान तथा चने की फसल में तथा सब्जी वर्गीय फसलों में इसका उपयोग करना चाहिए।

उपयोग की मात्रा प्रति एकड़

फसल	प्रोम	यूरिया	पोटास
चना	120	18	27
गेंहू	150	100	27
धान	150	100	27
मुंग	120	18	27

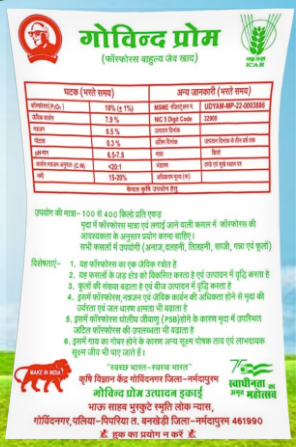

उपयोग की मात्रा प्रति एकड़

प्रोम के उपयोग के समय मृदा में हल्की नरमी होना चाहिए प्रोम को छायादार स्थानों पर भंडारित करना चाहिए

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम, भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर, पलिया-पिपरिया, तह.-बनखेड़ी, जिला - नर्मदापुरम (म.प्र.) 461990

kvkgovindgar2017@gmail.com +91 6294979854 kvkgovindnagar Kvkbankhedi www.kvkbankhedi.org.in kvkhoshangabad

गौं- आधारीत

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम

नरवाई और उसकी उपयोगिता

फसल काटने के बाद फसल के जो अवशेष बचते हैं, उसे नरवाई कहते हैं। पिछले कुछ वर्षो से देखा जा रहा है की किसान भाई फसल अवशेषो को जल्दी खेत तैयार करने के उद्देश्य से खेत मे ही जला देते है जिसके कारण भूमि का तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है परिणामस्वरूप भूमि में उपस्थित लाभदायक शुक्ष्म जीव नष्ट हो जाते है जिसके कारण कई प्रकार की हानियों का सामना करना पड़ता है।

नरवाई का उपयोग कम्पोस्ट खाद बनाने मे कर सकते है या इसको खेत मे मिला कर मिट्टी की भौतिक दशा को सुधारा जा सकता है, जिससे मृदा की जल धारण क्षमता बढ़ेगी और साथ ही साथ मृदा मे उपस्थित लाभदायक शुक्ष्मजीवो को भोज्य पदार्थ उपलब्ध होगा जिससे जमीन की उर्वरक शक्ति बढ़ेगी और अच्छी फसल प्राप्त होगी।

नरवाई को खेत में मिलाने के लाभ

- खेत में जैव विविधता बनी रहती ह। जमीन में उपस्थित लाभदायक शुक्ष्म जीव, मित्र कीट, शत्रु कीटों को खा कर नष्ट कर देते हैं।
- जमीन में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे फसल उत्पादन ज्यादा होता है।
- दलहनी फसलों के अवशेषों को जमीन में मिलाने से नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे फसल उत्पादन बढ़ता है।
- किसानों द्वारा नरवाई जलाने के बजाय भूसा बना कर रखने पर जहां एक ओर उन के पशुओं के लिए चारा मौजूद होगा, वहीं अतिरिक्त भूसे को बेच कर वे आमदनी को भी बढ़ा सकते हैं।
- किसान नरवाई को रोटावेटर की सहायता से खेत में मिला कर जैविक खेती का लाभ ले सकते हैं

नरवाई जलाने से नुकसान

- जमीन में जैव विविधता खत्म हो जाती है और लाभदायक सूक्ष्मजीव जल कर खत्म हो जाते हैं।
- जैविक खाद का निर्माण बंद हो रहा है जिससे रासायनिक पदार्थो का प्रयोग बढ़ रहा है।
- जमीन कठोर हो जाती है, जिसके कारण जमीन की जलधारण क्षमता कम हो जाती है।
- कार्बन ,नाइट्रोजन व फास्फोरस का अनुपात कम हो जाता है।
- जीवांश की कमी से जमीन की उर्वरक क्षमता कम हो जाती है।
- नरवाई जलाने से जनधन की हानि होने का खतरा रहता है।
- खेत की सीमा पर लगे पेड़ पौधे जलकर खत्म हो जाते हैं।
- नरवाई जलाने से समीप स्थित वनो मे आग लगने का खतरा रहता है।
- नरवाई जलाने से मृदा तापमान 150–175 डिग्री बढ़ जाता है जिससे केचुए तथा मित्र कीट मर जाते है ।
- नरवाई जलाने से वातावरण प्रदूषित हो रहा है जिससे जीव जन्तुओ मे विभिन्न बीमारियां का प्रकोप बढ़ रहा है ।

मच गया हाहाकार, धरती मां की सुनो पुकार ।
ये है एक अनमोल उपहार, मत करो इस पर अत्याचार ।।

गौ आधारित

कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर

नीमास्त्र

नीमास्त्र का प्रयोग रस चूसक कीट एवं इल्लियों के प्रबंधन के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

20 लीटर गोमूत्र | 1 किलो गाय का गोबर | 5 किलो नीम के पत्ते | 5 किलो निमोली

बनाने की विधि

सर्वप्रथम एक प्लास्टिक के ड्रम में 100 ली. पानी डालें फिर इसमें 1 किलो गाय का गोबर और 20 ली. गोमूत्र मिला दें। अब इसमें नीम की पत्तियों एवं निमोली की चटनी बनाकर डालें और डंडे से चलाकर जालीदार कपड़े से बंद कर दें और 40 दिन छाए में रखें, प्रतिदिन सुबह शाम डंडे से हिलाते रहें ।

उपयोग

नीमास्त्र का प्रयोग रस चूसक कीटों के प्रबंधन लिए किया जाता है नीमास्त्र का उपयोग रस चूसने वाले कीटों के प्रबंधन हेतु 20 लीटर मात्रा को 200 ली. पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 20 दिन के अंतराल से छिड़काव करें। इसको 6 माह तक भंडारित कर उपयोग कर सकते है।

सावधानियाँ

दशपर्णी अर्क को 6 माह तक भंडारित कर सकते है। उबालने के लिए मिट्टी के बर्तन का ही उपयोग करें। गोमूत्र धातू के बर्तन में न लें न ही भंडारित करें।